Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 11, Nov- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

इनेलो–भाजपा गठबन्धन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

निधि
शोधार्थी
राजनीति विज्ञान व लोकप्रशासन विभाग,
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा)

प्रो0 (डॉ0) सी0 बी0 सैनी
शोध–निर्देशक
राजनीति विज्ञान व लोकप्रशासन विभाग,
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
अस्थल बोहर, रोहतक (हरियाणा)

सार
वास्तव में 'इनेलो – भाजपा' सरकार, गठबन्धन सरकार नहीं थी। हरियाणा में वास्तविक सत्ता इनेलो पार्टी के हाथ में थी क्योंकि इसे विधानसभा में पूर्ण बहुमत प्राप्त था। समर्थन दे रखा था। इनेलों ने केन्द्र में भाजपा के नेतृत्व में बनी एन.डी.ए. गठबन्धन सरकार को अपने पांच सांसदों का समर्थन बिना किसी शर्त के दे रखा था। इस कारण मजबूरीवंश राज्य स्तर पर भाजपा ने इनेलो का समर्थन दिया। परन्तु हरियाणा में इस सरकार के चार वर्षो के कार्यकाल के दौरान भाजपा के मुख्य राज्य स्तरीय नेताओ, इसके विधायकों तथा सांसदों ने हर कदम पर अपने सहयोगी दल इनेलों की सदा आलोचना की तथा सरकार के प्रत्येक कार्य में बाधा डालते रहे। हरियाणा में यह नाम–मात्र की गठबन्धन सरकार थी। भाजपा के राज्य स्तरीय नेताओं ने इस हार का जिम्मेवार इनेलो के बागी विधायका को माना। इस कारण भाजपा के राज्य स्तरीय इनेलो सरकार में शामिलनहीं होना चाहते थे। परन्तु केन्द्रीय नेतृत्व के दबाव के कारण भाजपा के राज्यस्तरीय नेताओं ने इनेलों सरकार को बहार से समर्थन दिया तथा हरियाणा में 'इनेलो – भाजपा' गठबन्धन सरकार का निर्माण हुआ।
की–वर्ड :– गठबन्धन, भाजपा, इनेलो, हरियाणा

भूमिका

वास्तव में 'इनेलो – भाजपा' सरकार, गठबन्धन सरकार नहीं थी। हरियाणा में वास्तविक सत्ता इनेलो पार्टी के हाथ में थी क्योंकि इसे विधानसभा में पूर्ण बहुमत प्राप्त था। समर्थन दे रखा था। इनेलों ने केन्द्र में भाजपा के नेतृत्व में बनी एन.डी.ए. गठबन्धन सरकार को अपने पांच सांसदों का समर्थन बिना किसी शर्त के दे रखा था। इस कारण मजबूरीवंश राज्य स्तर पर भाजपा ने इनेलो का समर्थन दिया। परन्तु हरियाणा में इस सरकार के चार वर्षो के कार्यकाल के दौरान भाजपा के मुख्य राज्य

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 11, Nov- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

स्तरीय नेताओं, इसके विधायकों तथा सांसदों ने हर कदम पर अपने सहयोगी दल इनेलों की सदा आलोचना की तथा सरकार के प्रत्येक कार्य में बाधा डालते रहे। भाजपा के राज्य स्तरीय नेताओं के कई बार भाजपा के केन्द्रीय हाइकमान से मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला की शिकायचत की तथा हरियाणा में इनेलो से समर्थन वापिस लेने की सलाह दी। दूसरी तरफ, इनेलो सुप्रीमो चौ. ओमप्रकाश चौटाला ने हरियाणा में भाजपा के राज्य स्तरीय नेताओं को कोई महत्व नही दिया। इनेलों सरकार द्वारा कोई भी नीति या कानून बनाते समय अपने सहयागी दल भाजपा के नेताओं या उसके विधायकों से कोई सलाह नही ली जाती थी तथा इस सरकार के कार्यकाल में भाजपा के कई नेताओं पर मुकदमे भी चले। इस कारण भाजपा के राज्य स्तरीय नेता सदा इनेलो के विरोध मे रहे। परन्तु मजबूरी वंश उन्हें हरियाणा में इनेलो क साथ गठबन्धन रखना पड़ा। हरियाणा में यह नाम–मात्र की गठबन्धन सरकार थी। इस गठबन्धन में दरा फरवरी, 2000 के मध्यावधि चुनावों के परिणामस्वरूप ही पड़ गई थी। इनेलो के सहयोगी दल भाजपा को इन चुनावों म पराजय का सामना करना पड़ा था। भाजपा के राज्य स्तरीय नताओं ने इस हार का जिम्मेवार इनेलो के बागी विधायकों को माना। इस कारण भाजपा के राज्य स्तरीय इनेलो सरकार में शामिलनहीं होना चाहते थे। परन्तु केन्द्रीय नेतृत्व के दबाव के कारण भाजपा के राज्यस्तरीय नेताओं ने इनेलों सरकार को बहार से समर्थन दिया तथा हरियाणा में 'इनेलो – भाजपा' गठबन्धन सरकार का निर्माण हुआ। परन्तु इस गठबन्धन में मुख्य दरा ंफरवरी, 2002 के यमुनानगर उपचुनाव के दौरान पड़ी। कांग्रेस के विधायक डॉ. जे.पी.शर्मा के निधन के कारण यहां उपचुनाव निश्चित हुआ। हरियाणा विधानसभा के फरवरी, 2000 केमध्यावधि चुनावों में इस सीट पर 'इनेलो – भाजपा' गठबन्धन की तरफ से भाजपा की प्रत्याशी डॉ. कमला वर्मा ने चुनाव लड़ा। परन्तु वह कांग्रेस प्रत्याशी जे.पी.शर्मा से यह चुनाव हार गई थी। गठबन्धन के नियमों तथा शर्तो के अनुसार, अब इस सीट पर चुनाव भाजपा के उम्मीदवार को लड़ना था। इसलिए भाजपा नेताओं ने इनेलों सुप्रीमों चौधरी औम प्रकाश चौटाला से बिना सलाह किए यहां अपने उम्मीदवार के नाम की घोषणा कर दी तथा भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष रतनलाल कटारिया ने कई स्थानों पर आयोजित अपने पत्रकार सम्मेलनों में यह कहा कि भाजपा अपना निर्णय करने से पूर्व चौटाला से सलाह–मशविरा लेने की कोई जरूरत नही।"[1] यहां हरियाणा में 'इनेलो – भाजपा' गठबन्धन की राजनीति ने नया मोड़ लिया। क्योंकि हरियाणा के मुख्यमंत्री चौ. औमप्रकाश चौटाला द्वारा यमुनानगर उपचुनाव में इनेलों का उम्मीदवार उतारने की घोषणा से 'इनेलो–भाजपा' गठबन्धन में भीषण मतभेद उभर कर सामने आए तथा चुनाव परिदृश्य ही बदल गया। एक ओर से जहां इनेलो की ओर से पार्टी के महासचिव मलिकचंद गम्भीर को पार्टी का उम्मीदवार बनाया गया,वहीं भाजपा ने अपने उम्मीदवार के रूप में घनश्याम दास के नाम की घोषणा पहले ही कर दी थी। भाजपा के संगठन सचिव मनोहर लाल खट्टर ने इनलों सुप्रीमों चौ. औमप्रकाश चौटाल के इस फैसले को गठबंधन की भावना के खिलाफ बताया। परन्तु यमुनानगर सीट पर इनैलों द्वारा उपचुनाव लड़ने के पिछे इनेलो सुप्रीमों व मुख्यमंत्री चौ. औमप्रकाश चौटाला का

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 11, Nov- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

तर्क था कि भाजपा ने वहां अपने उम्मीदवार का मनोनयन करते हुए उनसे विचार–विमश तक नहीं किया तथा वहां ऐसा उम्मीदवार खड़ा कर दिया जो कांग्रेस को पराजित नही कर सकता था। लेकिन श्री औमप्रकाश चौटाला द्वारा यहां अपने उम्मीदवार को खड़ा करने के पीछे मुख्य कारण भाजपा के साथ राजनीतिक प्रतिद्वन्द्धता थी। उनका कदम गतवर्ष भाजपा द्वारा उनकी इस मांग को स्वीकार न किये जाने के प्रति, प्रतिशोध स्वरूप था, जिसमें उन्होंने अजित सिंह को केन्द्रिय मंत्रीमंडल में शामिल न किये जाने का आग्रह किया था।[2] केन्द्र में भाजपा द्वारा पश्चिमी उत्तरप्रदेश में अजित सिंह को राष्ट्रीय लोकदल से गठबन्धन करने पर तथा अजितसिंह को केन्द्र में कृषि मन्त्री बनाए जाने पर भी श्री औमप्रकाश चौटाला ने हरियाणा में इनेलो –भाजपा गठबन्धन के बने रहने तथा पार्टी के सांसदों द्वारा वाजपेयी सरकार को बिना शर्त के समथन जारी रखने का ऐलान किया था। परन्तु इनेलों द्वारा यमुनानगर में अपना उम्मीदवार उतारने के बाद हरियाणा स्तर पर इस गठबन्धन में दरार पड़ती दिखाई दी। भाजपा के राज्यस्तरीय नेताओं ने भाजपा केन्द्रीय हाईकमान को हरियाणा में इनेलों से समर्थन वापिस लेने का परामर्श दिया। परन्तु केन्द्र में भाजपा को इनेलों के सांसदों की जरूरत अधिक थी, इसलिए भाजपा के केन्द्रीय हाईकमान ने यमुनानगर उपचुनाव में इनेलों द्वारा अपना प्रत्याशी खड़ा करने पर भी हरियाणा में इनेलों के साथ गठबन्धन जारी रखने का ऐलान किया।[3]

21 फरवरी को यमुनानगर में उपचुनाव हुआ। तथा चुनाव परिणाम इनेलों के पक्ष में रहा। इनेलों प्रत्याशी मलिक चन्द्र गम्भीर भारी बहुमत से विजयी हुआ।[4] 'इनेलो – भाजपा' में ये गतिरोध यही समाप्त नही हुआ, बल्कि यह जनवरी, 2004 तक चलता रहा। उपरोक्त पृष्ठ भूमि के कारण भाजपा की स्थिति हरियाणा में दुविधापूर्ण बन गई थी। चौ. बंसीलाल जिनके साथ यह सता में भागीदारी थी के साथ गठबन्धन तोड़ने के उपरान्त 1999 में भाजपा ने बंसीलाल के कैम्प से आए दल–बदलुओं की सहायता से चौटाला की सरकार बनाने में मदद की, लेकिन 2000 के मध्यावधि चुनावों में हार के बाद भाजपा, जो बाहर से इनेलो सरकार को समर्थन कर रही थी कि स्थिति हास्यापद बन गई। सन् 2000 के मध्यावधि चुनावों में भाजपा को क्षति पहुचाए जाने के कारण मुख्यमंत्री से नाराज भाजपा न तो चौटाला सरकार की प्रशंसा कर सकती थी और न ही उस 'दल–बदलुओं व विश्वासघातों की सरकार' जिसका यह 1999 से समर्थन करती आ रही थी कि 'उपलब्धियों' का श्रेय लेने का दावा कर सकती थी। सताधारी दल की सहयोगी पार्टी होने के कारण भाजपा विपक्षी दल का स्तर या छवि भी प्राप्त नहीं कर सकती थी। पहले2000 के मध्यावधि चुनावों में तथा बाद में स्थानीय निकायों के चुनावों में इस बात का पता चल गया था कि भाजपा के जनाधार का हरियाणा में भरण हो चुका था। यमुनानगर जिसे भाजपा की मजबूत सीट माना जाता था, उपचुनाव में भी इसकी यहां पराजय हुई थी। इन सबसे हरियाणा में पार्टी को काफी आघात पहुंचा। फरवरी, 2000 के विधानसभा चुनावों के दौरान अपने को हरियाणा में इस गठबन्धन सरकार के दौरान झटका लगा। वस्तुतः भाजपा द्वारा हरियाणा के ग्रामीण क्षेत्रों में, जिन्हें इनेलो का जनाधार माना जाता था, अपने प्रभाव क्षेत्र का विस्तार किये

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 11, Nov- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जाने के प्रयास ही प्रदेश के सत्ताधारी गठबन्धन के इन दोनों दलों में खाई पैदा करने के लिए महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हुए। श्री चौटाला के नेतृत्व वाले इनेलों के प्रति भाजपा के नेतृत्व द्वारा स्पष्ट व दृढ स्टैंड अपनाने की बजाए ढिल–मुल तथा अनिर्णय की स्थिति अपनाये जाने से, हरियाणा में इसके लिए अपमानजनक स्थितियां पैदा होती रही। इसके नेताओं पर अपराधिक मुकदमे दर्ज किये गये। सम्प्रदायिक दंगों का इल्जाम भी भाजपा के माथे पर लगाया गया। लेकिन विडम्बना यह रही कि चार साल तक कुर्सी की खातिर राजनीतिज्ञों ने अपमान जनक स्थितियों तथा अपनी पार्टी पर पड़ने वाले घातक प्रहारों की भी चिंता नहीं की।[5] यमुनानगर में इनेलों की विजय तथा भाजपा की पराजय के पश्चात से ही इस गठबन्धन में विभाजन की खाई लगातार बढ़ती गई। पश्चिमी उतरप्रदेश के चुनावों में इनेलों को दिल्ली तथा राजस्थान की तरह लगभगसभी सीटों पर हार का सामना करना पड़ा, तथा इसके लिए इनेलो ने भाजपा को जिम्मेवार ठहराया।

राज्य में किये गये विकास कार्यो में गठबन्धन सरकार में शामिल भाजपा की स्थिति नगण्य थी। भाजपा के राज्य स्तरीय नेताओं तथा विधायकों से कोई विचार विमर्श नहीं किया जाता था। सारे फैसले इनेलो सुप्रीमों चौ. औम प्रकाश चौटाला तथा उनके बेटों द्वारा किये जाते थे। हरियाणा में सिर्फ नाम मात्र की गठबन्धन सरकार थी। हरियाणा में यह नाम–मात्र गठबन्धन सरकार जनवरी, 2004 तक कार्य करती रही। यहां तक भाजपा ने मजबूरीवंश हरियाणा में इनेलो सरकार को अपना समर्थन जारी रखा। इस दौरान चार राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों में परिणाम अपने पक्ष में देखते हुए केन्द्र में भाजपा के नेतृत्व में बनी एन.डी.ए. गठबन्धन सरकार ने चुनाव समय से पहले करवाने का निर्णय किया। भाजपा फील गुड मुद्दे को लेकर केन्द्र में दोबारा सरकार बनाना चाहती थी। प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की सलाह पर राष्ट्रपति ए.पी. जे. कलाम ने संसद के दूसरे सदन लोकसभा को भंग कर दिया। इसी के साथ चुनाव आयोग ने अप्रैल–मई में चार चरणों में लोकसभा चुनाव करवाने की घोषणा कर दी।[6]

इन चुनावों की घोषणा से पहले ही हरियाणा में भाजपा के राज्य स्तरीय नेताओं ने इनेलों के खिलाफ अपनी आन्तरिक गतिविधियों को भाजपा के हाईकमान के सामने उजागर किया। 30 जनवरी, 2004 कोभाजपा प्रदेशाध्यक्ष गणेशी लाल तथा भाजपा के अन्य प्रमुख नेता दिल्ली में केन्द्रीय भाजपा नेता तथा गृहमन्त्री श्री लाल कृष्ण अडवाणी तथा केन्द्रीय मन्त्री सुषमा स्वराज से मिले। इन्होंने 14वी लोकसभा के चुनाव हरियाणा में अपनी पार्टी के बलबुते पर लड़ने की सलाह दी तथा हरियाणा मे इनेलो की तुलना 'डुबते जहाज' से की तथा हरियाणा में इनेलो से समर्थन वापिस लेने की सलाह दी। भाजपा के केन्द्रीय नेताओं ने इस पर विचार विमर्श करने का आश्वासन दिया। भाजपा के राज्य स्तरीय नेताओं में प्रदेशाध्यक्ष श्री गणेशी लाल श्री कृष्ण पाल गुज्जर, श्रीराम विलास शर्मा, श्रीमान् कैलाश चन्द्र शर्मा, श्री सीता राम सिंगला तथा अन्य चार सांसद केन्द्रीमन्त्रीमंडल से मिलने गय थे।[7]

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 11, Nov- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

8 फरवरी, 2004 को भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीयाध्यक्ष श्री वैकया नायडू ने हरियाणा में सोनीपत जिले के गोहाना हल्के में भाजपा की 'संकल्प' रैली को सम्बोधित करते हुए हरियाणा में भाजपा द्वारा अकेले चुनाव लड़ने की ओर संकेत किया तथा हरियाणा में इनैलों तथा भाजपा के बीच गठबन्धन को तोड़ने की ओर संकेत किया तथा जनता से लोकसभा चुनाव में भाजपा के प्रत्याशी को वोट देने की अपील की। इसी के साथ 9 फरवरी, 2004 को गुडगांव में चौ. औमप्रकाश चौटाला ने केन्द्र में भाजपा से अपना समर्थन वापिस लेने तथा हरियाणा में भाजपा से गठबन्धन तोड़ने की घोषणा की। चौ. ओमप्रकाश चौटाला ने गठबन्धन टूटने के लिए भाजपा के स्तरीय नेताओं को जिम्मेवारठहराया। चौ. औमप्रकाश चौटाला ने भाजपा के राज्य स्तरीय नेताओं पर अनेक आरोप लगाए तथा केन्द्र की वाजपेयी सरकार की भी आलोचना की। यहां चौ. औम प्रकाश चौटाला ने भाजपा के राज्य स्तरीय नेताओं पर आरोप लगाया कि, ''उन्होंने पिछले चार वर्षो में गठबन्धन सरकार के विरूद्ध कार्य किया तथा प्रत्येक कदम पर सरकार की आलोचना की, यहांतक कि फतेहाबाद उपचुनाव तथा स्थानीय निकायों के चुनावों में इनेलो के विरूद्ध कांग्रेस के उम्मीदवार की मदद की।"[8]

उपरोक्त कारणों के चलते 1999 के अवसरवादिता के आधार पर बना 'इनेलो – भाजपा' गठबन्धन 2004 के लोकसभा चुनावों से पूर्व 9 फरवरी, 2004 को भाजपा तथा इनेलो की गलत कार्यविधियों के कारण टूट गया। इस गठबन्धन के टूटने पर भी हरियाणा में इनेलो सरकार शासन करती रही क्योंकि उसे विधानसभा में पूर्ण बहुमत प्राप्त था। 9 फरवरी, 2004 को हरियाणा में नाम–मात्र गठबन्धन सरकार टूट गई तथा सिर्फ इनेलो की सरकार रह गई।

हरियाणा में इनेलो तथा भाजपा में गठबन्धन टूटने से दोनों राजनैतिक दलों (इनैलो भाजपा) के जनाधार में कमी आई, क्योंकि गठबन्धन के काण इन्हें ग्रामीण तथा शहरी दोनों मतदातों क मत प्राप्त थे। हरियाणा में लोकसभा चुनाव अन्तिम चरण में 10 मई को होना निश्चित हुआ था। प्रत्येक राजनीतिक दल ने हरियाणा में लोकसभा चुनाव जीतने के लिए जोर–शोर से प्रचार किया। हरियाणा में भाजपा के राष्ट्रीय नेताओंने अपनी पार्टी के उम्मीदवारों के लिए वोट मांगे। 3 मई को फरीदाबादके पलवल में चुनावी रैली को सम्बोधित करते हुए भाजपा के सीनियर नेता श्री लाल कृष्ण अडवानी ने जनता को राष्ट्रीय राजनैतिक दलों को वोट देने की अपील की तथा उन्होनें कहा कि, अपना वोट क्षत्रि दलों को देकर, वेस्ट न करों क्योंकि ये क्षेत्रिय दल केन्द्र में कोई अस्तित्व नही रखते।"[9] तथा भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वैकया नायडू ने भी राष्ट्री राजनीतिक दलों को वोट देने की अपील की। श्री अडवानी के इस कथन की हरियाणा में प्रत्येक क्षत्रिय दल द्वारा आलोचना की गई। दूसरी तरफ इनेलो ने जनता के सामने अपनी चार साल की उपलब्धियां गिनवाई तथा भाजपा की अवसरवादिता की नीति की आलोचना की। कांग्रेस ने भाजपा तथा इनेलों दोनों की आलेचना की। कांग्रेस के नेताओं ने हरियाणा में औमप्रकाश चौटाला की तानाशाही सरकार, कानून व्यवस्था का कमजोर होना, अपराधों का बढ़ना, दुलिना कांड, कंडेला कांड, बिजली पानी की समस्या आदि मद्दों को लेकर चुनाव प्रचार किया। इन लोकसभा

Journal of Interdisciplinary and Multidisciplinary Research (JIMR)
E-ISSN:1936-6264| Impact Factor: 8.886|
Vol. 18 Issue 11, Nov- 2023
Available online at: https://www.jimrjournal.com/
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

चुनावों में हरियाणा में सभी राजनैतिक दलों ने स्वतन्त्र रूप से चुनाव लड़ा ᒪ हालांकि चुनाव से पहले कांग्रेस– बसपा, बसपा– इनेलो, इनेलो–भाजपा में दोबारा गठबन्धन को लेकर बातचीत हुई। परन्तु इस चुनाव में किसी भी दल का समान मुद्दों पर आपस में कोई गठबन्धन नहीं हुआ। यही कारण रहा कि इसके चुनावी परिणाम अनोखे रहे।

10 मई को अन्तिम चरण में हरियाणा में लोकसभा चुनाव के लिए मतदान हुआ। राज्य में मतदान शान्तिपूर्ण तरीके से हुआ। 13 मई को इन चुनावों के परिणाम घोषित हो गये। हरियाणा में इनेलों तथा भाजपा, जिन्होंने 1999 के लोकसभा चुनावों 5–5 सीटों पर जीत दर्ज की थी कि बुरी तरह पराजय हुई। राज्य में सरकार चला रही इनेलो पार्टी को एक भी सीट पर विजय प्राप्त नहीं हुई तथा चौ. औमप्रकाश चौटाला के दोनो बेटे चुनाव हार गए। 1999 के लोकसभा चुनावों की अपेक्षा इस चुनाव में इनेलों के वोट प्रतिशत में भी कमी आई। दूसरी तरफ भाजपा, जो अपने बल–बूते पर हरियाणा में सरकार बनाने की बात करती थी, को बुरी तरह पराजय का सामना करना पड़ा। भाजपा को कुल 10 सीटों में से सिर्फ एकसीट पर विजय प्राप्त हुई। भाजपा प्रत्याशी श्री किशन सिंह सांगवान ने सोनीपत सीट से विजय प्राप्त की। किशन सिंह सांगवान को सोनीपत से जीत, अपने व्यक्तित्व के प्रभाव के कारण प्राप्त हुई, न की भाजपा के कारण कांग्रेस, जिसमें हरियाणा में आन्तरिक गुटबन्दी देखने को मिलती थी तथा जिसे 1999 के लोकसभा में एक भी सीट प्राप्त नही हुई थी को इन चुनावों में चुनावी लहर इनेलो तथा भाजपा के विपक्ष में होने के कारण कुल सीटों में से 10 सीटों पर विजय प्राप्त हुई तथा उसका वोट प्रतिशत भी बढा।[10]

1999 के लोकसभा चुनावों से पहले बना 'इनेलों – भाजपा' गठबन्धन 2004 के लोकसभा चुनाव से पहले आपसी आन्तरिक विरोध के कारणटूट गया। इसका नुकसान दोनों राजनैतिक दलों (इनेलो तथा भाजपा) को भुगतना पड़ा। जहां गठबन्धन बनने के कारण इन दोनों दलों को 1999 के लोकसभा चुनावों में सभी सीटों पर विजय प्राप्त हुई थी, चुनावों में गठबन्धन के टुटने के कारण एक सीट को छोडकर सभी सीटों पर हार का सामना करना पड़ा तथा इन चुनावों के परिणाम स्वरूप इनाले तथा भाजपा को हरियाणा में अपने जनाधार का भी पता चल गया। मई 2004 के लोकसभा चुनावों ने फरवरी, 2005 में होने वाले हरियाणा विधानसभा चुनावों की पृष्ठभूमि भी तैयार कर दी।

हरियाणा में मई, 2004 के लोकसभा चुनावों के परिणामों ने हरियाणा के राजनीति परिदृश्य को नया मोड दिया। कांग्रेस में आन्तरिक गुटबन्दी होने पर भी मतदान उसके पक्ष में रहा। दूसरी तरफ इनेलों की तानाशाही सरकार के कारण उसका जनाधार घटा तथा इसकी सहयोगी पार्टी भाजपा, जो अवसरवादिता की राजनीति के कारण जनता में अलोकप्रिय हो गई थी को भी 2004 के लोकसभा चुनावों में हरियाणा में पराजय का सामना करना पड़ा। यदि ये दोनों दल गठबन्धन बना कर चुनाव लडते तो शायद चुनाव परिणाम कुछ और होता।

वास्तव में 'इनेलो – भाजपा' गठबन्धन विचारधारा या किसी निश्चित सिद्धान्तों पर आधारित नही था तथा ना ही उनका कोई साझा कार्यक्रम या मुद्दे थे। इस कारण इस गठबन्धन में शुरू से दरार पड़नी शुरू हो गई तथा सरकार द्वारा अपना कार्यकला

पूरा करने से पहले ही दोनों दलों केआपसी स्वार्थ के कारण यह गठबन्धन टूट गया था, जिसका खामियाजाकी इन दोनों राजनैतिक दलों को 2004 के लोकसभा चुनाव मे हरियाणामें भुगतना पड़ा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]भाटिया, रवि.पी., ''स्ट्रक्चर बेसीक ऑफ कोईलिशन गवर्नमैन्ट'', दी इंडियन जरनल ऑफ पोलिटिक्ल साईस, वोल्यूम 64, नं. 1–2, जनवरी–जून, 2003

[2]राजालक्ष्मी, टी.के., ''एन अनईजी अलाईन्स् इन हरियाणा'', फ्रैन्टलाईन, 18 फरवरी, 2000

[3]रेड्डी, ऐ.एस., "कोईलिशन गवर्नमैन्ट : इफक्टीव एण्ड वर्कऐबल'', पोलिटिक्स इंडिया, वोल्यूम – 1, नं.10, अप्रैल, 1997

[4]सिंह, भूपेन्द्र, ''पोलिटिक्स ऑफ फक्सनिलिज्म इन पंजाबः ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ शिरोमणि अकाली दल'', दी इंडियन जरनल ऑफ पोलिटिक्ल सांईस, वोल्यूम LXVII, न. 4, अक्टूबर–दिसम्बर, 2006

[5]सिन्हा, सच्चीदानंद, कोईलिशन इन पोलिटिक्स, उपवल प्रैस, मुजफ्फरनगर, 1997

[6]अग्रवाल, जे.सी. एण्ड चौधरी, एन.के., लोकसभा इलेक्सन, 1999: लास्ट ऑफ दी मिलेनियम, शिप्रा पब्लिकेशन, न्यू दिल्ली, 2000

[7]जैन, राजेश, भारतीय राजनीति के नये आयाम, कॉलेज बुक डिपो, जयपुर, 2000

[8]भाम्भरी, सी. पी., इंडियन पोलिटिक्स : 2001–2004, पोलिटिक्स प्रोस्स एण्ड चेंज ऑफ गवर्नमन्ट, शिप्रा – पब्लिकेशन, दिल्ली, 2005

[9]राय, गुलशन, फोरमेशन ऑफ हरियाणा, बी. आर. पब्लिकेशन, दिल्ली, 1987

[10]जोधका, सुरेन्द्र एस., 'चेंज ऑफ गवर्नमैन्ट एण्ड बियोन्ड'', इक्नोमिक एण्ड पोलिटिक्ल विक्कली, वोल्यूम XXXIV, न. 32, 7 अगस्त, 1999